परीते राजसि सकल कृत विपाके ॥५॥ विगलित
वसनं परिहृत रशनं घटय जघने मपिधाने
किसलय शयने पंकज नयने निधि मिव हर्ष
निधाने ।६। इति रति मानी रजति विदानी मि
य मपियानि विरामम ॥ कुरु मम वचने स
त्वर रचने हृदय मध रिपु कामे ।७॥ श्री जयदे

शंकित भवदुपयानम् ॥ रचयति शयनं सच-

कितनयनं पश्यति तव पन्थानम् ॥३॥ मु-

खरमधीरं त्यज मंजीरं रिपुमिव केलिसुलोलं

चल सखि कुंजं सतिमिरपुंजं शीलय नील-

निचोलम् ॥४॥ उरसि मुरारेरुपहितहारे घ-

न इव तरलबलाके ॥ तडिदिव पीते रतिवि-

गी॰गो॰
मी॰

स्मरति स्मरगः सन्नामामश्चन्नैपेत कृतान्यथेना
म॥७॥ हारावली तरल कांचन कांचिदाम
मंजीर कंकण मणि द्युति दीपितस्य॥ द्वारे
निकुंजनिलयस्य हरिं निरीक्ष्य व्रीडा वतीम
थ सखी निजगाद राधाम्॥ ६६॥ रागवे
याट ताल॥३॥ अष्टपदी॥ ॥ मंजुतर

व कृत हरि सेवे भणति परमरमणीयम्॥ प्रमु
दित हृदये हरिमति सदयं नमत सुकृत क
मनीयम्॥ ८॥ रागगेयाद ताल॥ २॥ श्लोक
सभय चकितं विनसन्तीं दृशौ तिमिर पथि
प्रति तरु मुहुः स्थित्वा मन्दं पदानि वितन्वं।
न्ती कथमपि रहः प्राप्ता मंगै रनंगत रंगिभिः

गा॰गं॰
गी॰

लस रति व लितल लित गीते।४।विनत वद्ध व
लि नव पलव चये।विलस विर मल सपीन
जघने।५।मधु मदित मधुप जल कलित गा
वे।विलस मदन रस सरस भावे॥६॥मधुर
तर पिक निकरनि नद कलरवे।विलसदशा
न रुचि रुचिर शिखरे॥७॥विहित पद्मा।

कुंजतल केलि सदने विलस रति रभस हसित

वदने ॥१॥ प्रविश राधे माधव समीप मिह न

व भवद शोक दल शयन सारे । विलस कुच

कलश तरल हारे ॥२॥ कुसुम चय रचित शु

चि वास गेहे ॥ विलस कुसुम सुकुमार देहे

॥३॥ चल मलय वन पवन सुरभि शीते वि

गा॰गो॰
गी॰

य वेदा मद्दे ।१४। घट किट निवसाभियाहि
ताया अननय मद्दत्रे चानये घ्याः ॥ इति म
गुविश्वता सावीनिश्वका स्वय भिद मेनत्ता ३
सर्जगाद राय्यम ।७। ध्वंचिवेन विरं वह्नेन
य सनि श्रीनो स्पर्शेना पिनः केदर्पेणाचप
त भिक्कुति स्वया सन्नाय विंका यरम ॥ ग्र

वनी सदा समाजे ॥ भणति जयदेव कविराज
राजे ॥ ८ ॥ अष्टपदी ॥ राग गंधार न्याल ॥ ३ ॥
श्लोक ॥ सान्द्रानंद पुरंदरादि दिविषद्वृंदै रमंदा
दरा दानम्रै र्मुकुटेंद्र नील मणिभिः संदर्शितेंदी
वरम् ॥ स्वछंदं मकरंद संदरगलन्मन्दा कि
नीमेदुरं श्री गोविंद पदार विंद मशुभस्कंदा

गी॰ गो॰
श्री॰

रतरतारं पतितयोः ॥ तदानीं राधायाः प्रिय
तम समालोक समये पपात स्वेदाम्बु प्रस
र इव हर्षाश्रु निकरः ॥ ११ ॥ भजन्त्या स्तल्पा
न्ते कृत कपट कण्डूति पिहित स्मिते याते
गेहाद्बहिरव हितालि परिजने ॥ प्रियास्यं
पश्यन्त्याः स्मर परवशा कूत सुभगम्

सो केन्त दले कुकवण्ण भिट् भूतेप लक्ष्मीलव

क्रीते दास श्वोप सेवित पदां भोजे कुतः संभ्र

मः ॥७१॥ साम साधसमा नंद गोविंदे लो

ल लोचना शिंजान मंज मंज मंजीरं प्रविवे

श निवेशनम् ॥७२॥ प्रति कण्ठा पांगे श्रव

ण पथ पर्यंत गमन श्वामे नैवा दृशो स्तरल

राग
गी

हसि वशे वट वदन मनेग विकासं ॥ हारममल
तरतार मुरसि दधतं परिलंब्य विदूरम् ॥
स्फुट तर फेन कदम्ब करंबित मिव यमुना
जल पूरम् ॥२॥ श्यामल मृदुल कलेवर मं
डल मधि गत गौर दुकूलम् ॥ नीलनलि
न मिव पीत पराग पटल भरवलयित मू

मलजाया लजा यगाम दिव हूं मखाटमः॥२४

राग मंयार लाल॥२॥ प्रबन्दो॥ रागावद

न विलोकन विकसित विविध विकार वि

भंगम्। जल निधि मिव विधु मंडल दर्शन

तरलित तुंग तरंगम्॥८॥ हरि मेकर सं

चिर मभि लषित विलासम्॥ सा ददर्श गुरु

गी.गो.
गी.

किरणा कुरितो दव जल धर सुंदर स कुसुम के
शे तिमिरो दित विधु मंडल निर्मल मलयज
तिलक निवेशे ।६। विपुल पुलक भर दंतुरि
ते रति केलि कला भिरधीरे । मणि गण किर
ण समूह समुज्वल भूषण सुभग शरीरम
।७। श्रीजयदेव भणित विभव द्विगुणी कृ

ले ॥३॥ तरल दृगंचल चलन मनोहर वदनज
नित रति रागम् । स्फुट कमलोदर खेलित
खंजन युग मिव शरदि तडागम् ॥४॥ वदन
कमल परि शीलन मिलित मिहिर सम कुंड
ल शोभम् ॥ स्मित रुचि रुचिर समुल्लसि
ताधर पल्लव कृत रति लोभम् ॥५॥ शशि ।

गी·गो·
टी·

मवोच हरिः प्रियाम् ॥ राग गंधार ताल ॥१॥ अष्ट
पदी ॥ किसलयशयनतले कुरु कामिनि च
रणकमलविनिवेशं ॥ तव पद पल्लव वैरिप
राभव मिद मनु भवतु सुवेशम् ॥ ध्रु ॥ क्षणमधु
ना नारायणम् अनुगतम् अनुसर राधिके ॥ कर-
कर कमलेन करोमि चरण मह मागमिता ।

न भूषण भारं ॥ क्षणमत हृदि विनिधाय हरीं

सुचिरं सुकृतो दयमानं ॥८॥ अष्टपदी ॥ राग

गंधार ताल ॥३॥ श्लोक ॥ गतवति सखी वृं

दे मंदत्रपा भर निर्भर स्मर पर वशाकूत स्मे

न स्मित स्नापिताधराम । सरस मलसं दृष्ट्वा

दृष्ट्वा मुहुर्न्नव पल्लव प्रसव शयने निक्षिप्ताक्षी

गी·गो·
गी·

शे विनिवेशय शोषय मनसिज नाशम्॥४॥
प्रथय तथा मम मानय भामिनि जीवय म
न शिव दासम्॥ त्वयि विनिहित मनसं विर
हानल दग्ध वपुष मविलासम्॥५॥ शशिमु
खि मुखरय मणि रशना गुण मनु गुण कंठ
निनादम्॥ श्रुति युगले पिक रुत मम शा

सि विदूरं ॥ क्षणमुपकुरु शयनोपरि मामिव

नूपुर मनुगति शूरं ॥ २ ॥ वदन सुधानिधि गलि

त ममृत मिव रचय वचन मनुकूलं ॥ वि

रह मिवापन यामि पयोधर रोधक मुरसि दु

कूलं ॥ ३ ॥ प्रियपरिरंभण रभस वलित मिव पु

लकित मति दुरवापम् ॥ मदुरसि कुचकल

ताल ॥ ४ ॥ श्लोक ॥ घनस्वेदः पुलकोद्भेदानिवि
ड श्लेषैर्निमेषैश्च चकोराक्षक्षण विलोकिते पर
स्पृया पाने कथ्या नर्मभिः आनंदाधिगमेन म
न्मथ कला युद्धेऽपि यस्मिन्नभूदुद्भूतः स तयो
र्बभूव सुरतारंभः प्रियंभावुकः ॥ १८ ॥ मीलद्दृ
ष्टि मिलत्कपोल पुलकं सीत्कारधारावशा द

मय विनोदव सादम् ।६। मामति विफल रुषा वि
कली कृत मव लोकित मधुनेदम् । मीलति
लजित मिवन यनं नव विरम विसृजरति खे
दम् ।७। श्रीजयदेव कवेरिद मनुपद निगदि
त मधुरिपु मोदम् । जनयतु रसिक जनेषु म
नोरम रति रस भाव विनोदं ॥ राग गंधार

रा.गं.

भमितः कचेयर मधुस्पन्देन संमोहितः कांतः॥

कामपि त्वमि मापन दृष्टो कामस्य वामागतिः

७८॥ वामांके रतिकेलि संकुलरणारंभे तया। सा

हस प्राये कांत जयाय किंचिदुपरि प्रारंभि यत्संभ्र

मांनिस्पंदा जघनस्थली शिथिलिता दोर्वल्लि

रुत्कम्पितं वक्षोन्मीलितं मक्षि पौरुष

बक्ताजलकेलिकाञ्चविकसद्दंतास्त्रयौ नाथ
रं स्यासोत्काम्यपयोधरं भरणापरिष्वंगात्कुरंगी
दृशो हर्षोत्कर्षविमुक्तनिःसहतनोर्धन्यो
धयत्याननम्॥ ७॥ दोर्भ्यां संयमितः प
योधरभरेणापीडितः पाणिजैराविद्धो दश
नैः क्षताधरपुटः श्रोणीतटेनाहतः हस्तेना

रा॰गे॰
गी॰

क्लांत मपि मंडन वांछया निज गाद निराबाधा रा
धा स्वाधीन भर्तृका ।८२। इति मनसा निग दं
तं स्मरशंने सलिलोन खिन्नांगी राधा जगाद
सादर मिद मानंदेन गोविंदम् ।।८३।। राग गो
पार मालतीन ।।३।। अष्टपदी ।। कुरु यदुन
न्दन चन्दन शिशिरतरेण करेण पयोध

रमः ह्रीतो क्रनः सिथनि ॥७४॥ नस्याः पाटल

पाणि जो कित स्रो निश्च कषाये हथौ सदिहूं

नै थरश्रोणिमा विलसिता स्वलसजो सहं

जाः कोचीदा भदरस्लथो चल मिति श्रांत द्वि

रोनै हश्रोरेभिः कामश्रैस्लदस्ड नमम्भ्रान्त

स्रभ्मैनः कीलिनम ॥ ८ ॥ ग्रंथ कांते रति

गी॰गो॰
गी॰

मनसिज पाश विलास करे शुभवेष निवेशाय
कुंडले ॥ ३ ॥ मृगमद् वयं दवयंतमपरि कचि
रे रुचिरं मम सम्मुखे जितकमले विमले
परिकल्पय नमि जन कमल के मुखे ॥ ४ ॥
मृगमद रस ललितं ललितं कुरु तिलकमलि
क रजनी करे ॥ विहित कलंक कलंक र

६८

68

रे॥ मृगमद पत्रकमत्र मनोभव मंगल कलश

सहोदरे॥१॥ निजगाद सायदु नंदने क्रीडति

हृदया नंदने॥ त्वदधर चुंबन लंबित कज्जलमु

ज्वलय प्रिय लोचने अलि कुल गंजन मंजन

कं रति नायक सायक मोचने॥२॥ नयन कुरंग

तरंग विकासि निरास करे श्रुति मंडले॥

गा॰गो॰
गी॰

यदेव वचसि जयदे मदयं हृदयं कुरु मंडने हरि
चरण स्मरणामृत कृत कलि कलुष ज्वर खं
डने ॥ ८ ॥ अष्टपदी ॥ रागगंधार ताल ॥ इ ॥
श्लोक ॥ रचय कुचयोः पत्रं चित्रं कुरुष्व कपोल
योर्घटय जघने कांची मंच स्रजा कबरी भ
रम ॥ कलय वलय श्रेणी पाणौ पदे ।

मत्तानन विभ्रमित भ्रम शीकरे ॥ ५ ॥ ममक

विरे चिक्करे ऊरु मानद मानस जयधज नाम

रे १ गति गलिते ललिते कुहुमा निशिंबेडि

शिंबेड कडामरे ॥ ८ ॥ सर सबने जयवने सम

शेवर टवणा केदरे ॥ मणित रणाना वसना

मदमाति गुमाराय वासय हृदरे ॥ ९ ॥ श्रीज

गी· गो·
टी·

जः ॥ ८५ ॥ पर्य्यंकी कृत नाग नायक फणाः
श्रेणी मणीनां गणे संक्रांत प्रति बिंब संव
लनया बिभ्रद्विभु प्रक्रियाम् ॥ पादां भोरु
ह धारि वारिधि सुता मक्ष्णां दिदृक्षुः शतैः
कांय व्यूह मिवाचरं नुपचिती भूतो हरिः
पातु वः ॥ ८६ ॥ तिर्य्यक कंठ विलोल मौलि

ऊक नुश्रा विति त्रिगादिनः श्रीनः पीतेनावरो
पि नथ्या कर्मेनु ।। ८४ ।। श्रानमील निदोलम
श्रुतगुः संवीन पीतेनाश्चके गथायथ्थकिने
त्रिलोका रक्षिति सैवें स्वाली मेरले ।। श्रीउावे
चल मेवले नगनश्रो गथाय गथानवे सैवें
मेर स्वकें तजोल्ल जगला नन्दाय नेदाम

रागो
गी

न वेशे ॥ चलित दृगंचल चंचल मौलि कपोल
विलोल वतंसम् ॥२॥ रासे हरि मिह विहित
विलासं । स्मरति मनो मम कृत परिहासं ॥
चंद्रक चारु मयूर शिखंडक मंडल वलयित
केशम् ॥ प्रचुर पुरंदर धनु रनुरंजित मेदुर
मुदिर सुवेशं ॥३॥ गोपकदंब नितंब वती

नरलोन्मे सम्म वेशोद्धरजीनिस्यान हन्ता वयान

ललना लवेला सेलल्लिना: श्रेमगा कलदलि

ना: हम्मत्य मथ्ये राग सविन्दो हया मारे

वो मयुहृद्नस दटन देवं कदालोमेयः॥

८॥ गीतं गंधार नाल ॥ ३ ॥ अष्टपदी ॥

मंचर दयर सपा मयुर धनि मालविन मोर

ग्री ११

गी॰गो॰

दे ॥ पीन पयोधर परि सर मर्दन निर्दय हृदय
कपाटम् ॥ ५ ॥ मणिमय मकर मनोहर कुंड
ल मंडित गंड मुदारं ॥ पीत वसन मनुगत
मुनि मनुज सुरा सुर वर परिवारम् ॥ ६ ॥
विशद कदंब तले मिलितं कलि कलुष भयं
शमयंतम् ॥ मामपि किमपि तरंग दनं

मव त्रेवन नेविन लोभे ॥ बंधुजीव मधुरा

धर पल्लव मल्ल स्मित स्मित शोभम् ॥३॥ वि

पुल पुलक भुज पल्लव वलयित वल्लव युव

ति सहस्रम् ॥ कर चरणोरसि मणि गण भू

षण किरण विभिन्न तमिस्रम ॥४॥ जलद

पटल वलदिंदु विनिंदक चंदन तिलक ललाट

गी·गो·
गी·

डगंडस्थलं ॥ मामुद्वीक्ष्य विलज्जितस्मितसुधा
मुग्धाननं कानने गोविंदं व्रजसुंदरीगणवृ
तं पश्यामि हृष्यामि च ॥ ८८ ॥ अंतर्मोहनमौ
लिघूर्णितचलन्मंदारविस्रंसनः स्तब्धाकर्ष
णदृष्टिहर्षणमहामंत्रेण कुरंगीदृशां दृप्यद्दान
वदूयमानदिविषद्दुर्वारदुःखापदां ॥ ध्वंसः

७३

73

गतहरा मनसा रमयंतं ॥७॥ श्रीजयदेव भ
णित मति सुंदर मोहन मधुरिपु रुपं । हरि
चरण स्मरणं प्रति संप्रति पुण्य वता मनु रू
पम् ॥८॥ राग गंधार माल ॥३॥ श्लोक ॥
हस्त स्रस्त विलास वंशम नृजु भ्रूवल्लि म
दल्लवी वृन्दोत्सारि दृगंतवी क्षित मति स्वेदा

ग॰ गे॰
गी॰

माध्वीक चिंतान भवति भवतः शर्करे कर्कशा
सि द्राक्षे द्रक्ष्यंति के त्वा नमृत मृत मसि क्षीर
नीरं रसस्ते ॥ माकंद क्रंद कांता धर धर ।
णितले गच्छ यच्छंति यावद्भावं शृंगार सा
रस्वत मय जय देवस्य विष्वग्वचांसि ॥ ६१ ॥
श्री भोजदेव प्रभवस्य रामादेवी सुत श्रीज

केलिविलोलो हृयनवो श्र्यंयासि वेशोरकः ।।८४।।
गंधर्वकलासु कौशलमनुध्यानंच यद्वैष्णवं
यत्शृंगारविवेकतत्वमपि यत्काव्येषु ली
लायितं ।। तत्सर्वं जयदेव पंडित कवेः कृ
ष्णैक तानात्मनः सानंदाः परिशोधयंतु
सुधियः श्रीगीत गोविंदतः ।।५०।। माधी

गी.
११

गा॰गो॰
गी॰

याव गीतगोविंद परिच्छेदः समाप्तः ॥ ॥

75

य देवस्य ॥ पराशरादि प्रियवर्ग कंठे श्रीगी
त गोविंद कवित्वमस्तु ॥ जय श्रीविमसैन मे
रि इव मंथर कमलैः खंडे सिंहासने दीपव
रा मदह मदिन रख ॥ भजा पीठ श्रीश हृत
ककलाया पीठ कविराः प्रकीर्णा स्तगिंवर्ज
यति भजनंदेशे मवसिमः ॥ ५४ ॥ इति रागये

ग·गो·
गी·

कृत सुकृत कामिनी ४ अहह कलयामि वलया
दिमणि भूषणं । हरि विरह दहन वहनेन वहुदू
षणं ५ कुसुम सुकुमार तनु मतनु शरलीलया स्र
गपि हृदि हंति मामति विषम शीलया ६ अहमिह
निवसामि नगणित वन वेतसा । स्मरति मधु सूद
नो मामपि न चेतसा ७ हरि चरण शरणं । ८

रूप मपि यौवनं १ यामिहक मिह शरणं सखीजन
वचन वंचिता । यदनंगगमनाय निशिगमन मपि शी
लितं । तेन मम हृदय मिदम सम शरकीलितं २
मम मरण मेव वरमति वितथ्य केतना ॥ किमिह
विसहामि विरहा नलमचेतना ३ मामहह विधु
रयति मधुर मधुयामिनी । कापि हरमनभवति

रा·रा·
२६
26

रागिनी राम कली ताल चचेरी विसपद ॥

मेरी मति राधिका चरण रज मैं रहो ॥ इतिश्रुष्या

ई इहै निहचै कर्यो अपने मन मैं पर्यो भूलि कै को

उ कछू औरहू फल कहो ॥ इंपानरा । अथ आभो

गः करम कोऊ करो ज्ञानऊ अभ्यासो मुकतिकेज

तन करि वृथा देहो दही ॥ रसिक वल्लभ चरण

न लगन कीने ॥ रागिनी राम कली ताल ८ ॥
विसपद माई गिरि धरनके गुण गाउं ॥ इनिय
स्याई मेरनो वन पहै निस दिन श्रोवन सवि उपजा
उं ॥ इसंतरा । अथ आभोगः । खेलन आंगन आ
उ लाडिलेनैं कउं दरसन पाउं ॥ कंभ निरा सहि
लगके कारण लाल वला गिर हाउं ॥

रा-रा-
२८
27

उदि वेरि मिलि मीत सौं मेरो हित वचन जिनि भूलि फेरे ॥ रसिक प्रीतम संग विहरि रस रंग मैं कौन डरव अनंग को सवनि वेरे ॥ रागिनी राम कली ताल ३ विसपद ॥ वेलाल तेडी पैजनीया ऊन कैंदी ॥ इतिश्रस्थाई माथेवे तेंडे मकट विराजेरी ऊ खाल लटकैंदी ॥ रसेनरा । अथश्राभोगः भईरी

कमल ज्ञग शरण परि यह मह्रा ग्रहि पथ्य फल

लह्रो ॥ रागिनी रामकली नाल ॑ वैवेरी वि

लपद मानिनी मानि जिनि मौन पतो करै आउ

पाइन परैं नाथ नेरे ॥ इतिग्रस्थाई दरस जाको क

रन जगतन रमे सदा मो नोइ कटक नेरो वदन है

रे ॥ इअंतरा । अथआभोगः हौ करति समसि

बडे गोपकी वेटी ॥ कुंभन दास गिरिधरन लाल

सौं भज्ज श्रीफ नील पेटी ॥ रागिनी राम कली

ताल १ विस्नुपद । हो मोहन हौं हारी तुमजीते

इनि श्रमस्याई । नागर नट पट देऊ हमारे कोपत

हैनन सीते ॥ अंतरा । अथ श्राभोग ॥ रसिक गो

पाल लाल श्रवलनि पर पनी कहा अनीते ॥ पर

चकोर चेरुवालि रानि माति रति घट केंटी ॥ आसक
रन प्रभु मोहन नागर चरण कमल चित देंटी ॥
रागिनी रामकली ताल ३ विलंपद । हमारे
दान देरी गुजरेटी ॥ इनिप्रभुप्याई नित उठि आजा
न चोरि दधि चेचन आज अचानक भेटी ॥ इसोत
रा । अथआभोगः प्रति मन रानके से कुटोगी

रा॰रा॰
२५
29

वरस कुमारे ॥ रागिनी रामकली ताल ३ विल
पद । वनत नहीं जमुना जु कोन हैवो ॥ इतिस्थ
स्थाई । बोली वीर कुसलले आजे कठिन भयो घर
जैवो ॥ इअंतरा । अथ आभोगः । जोहरि हमसौं
ऐसो करि हाको इह बाटन ऐवो ॥ श्रीविठल गि
रि धरन लालसों वीनती करि घर जैवो ॥ रागिनी

मानेंद प्रभु हम सब जानत तुम गाल बजावन रीते·
रागिनी रामकली ताल ३ विलपद मोहन देहो
वसन हमारे ॥ इति ध्रुपद्याई । कहैंगी जाय ब्रजपति
जूके आगे करत अनीतल लारे ॥ इत्यंतरा । अथ आ
भोगा । तुम ब्रज राज किसोर नंद सुत सब हिनके
प्राण प्यारे ॥ गोविंद प्रभु पीयदासी निहारी सुंदर

ग॰ग॰
३॰
30

ली ॰ विश्लपद। मनोवल्लभा योषा पद कमल उ
गले सदा वस तमस त्रिविध रस भाव वलिते ॥
इतिश्रुष्याई। ब्रज महिमा भास वासना वासिते मा
भवन्त जात निज भाव वलिते ॥ इसंतरा। श्रयश्रा
भोगा: । भजन्त भजनीय मति शयति रुचिरे चिरे
वरण युगले सकल गुण ह ललिते ॥ वदन्त हरि रा

रामकली ताल १ विस्नुपद । ग्वालिन मो वाति
बसन छपाने ॥ इति अस्थाई । सीत काल जल
भीतर ठाढी आवत नाही दयाने ॥ इत्यंतरा ॥
अथ आभोगः । तुम ब्रज राज कुमार प्रबल अति
कौन परी यह वानैं ॥ हम सब दासी तिहारी ब
जपति तुम बड निपट सयानैं ॥ रागिनी राम क

रा·गा
३१
31

आवे सखि यही राम रसाभ्र अमेरो ॥ रागिनी राम
कली नाल २ विस्तपद । हेलीन वनि झंजली
लारस सविन श्रीवल्लभ वनमोरे ॥८ घेरा घेरा विश्र
इतिश्रस्थाई
न क्षिभन चन दामिनि दुनि फल फल प्रति दोरे·
झंयेनरा । अथआभोगः । करत आवेस विरह
विरहनी झनि भनल वऊन कठोर ॥ पञ्च नाम

स इति मा भवन्त मन्कं रुपि भवन्त मम देव मन जन्म

फलितं ।। रागिनी राम कली ३ विस्नुपद ।।

श्रीमद्दलभ रूप म्हरंगे ।। इति ग्रस्थाई । नव सिवे

प्रति भावनके भूषण हेरावन संपाति श्रेगश्चेरो ।। इमे

नरा । प्रण्यग्राभोगः । परम परम गिरि धर जूको

नाई पेन मैन व्रज राज उर्कैगे ।। पद्मनाभ देवे वनि

पद्मनाभ सुत हित कीयो मारग नेह मुरलिका वे
ह ॥ रागिनी रामकली ताल २ विष्णुपद ।
रुक मिति चलन सिखावति पाइन ॥ इति ध्रुस्था
ई । सुतकी गहें अंगुरिया डोलति सोभा कोटिक
भाइन ॥ इत्यंतरा । प्रथमाभोगः । ठुमकि ठुम
कि पग धरत धरनि पर लेत खेंग उर लाइन ॥

मथुरेस विठारन श्री लछमन भट सुत और ।।
रागिनी रामकली ताल ॐ विसपद । सखि
री सोभा रस मय भाव प्रकट करि श्री वल्लभ वर
देह ।। इति प्रस्थाई । अंग अंग व्रज वधू विरहनी
व्यापी जुगल सनेह ।। इत्यंतरा । अथ आभोगः
श्री हृदारण्य देह प्रकटित हृदे निगूढ केदरा देह॰

रा॰रा॰
३३
33

मरय मरस्रते ।। इतगोवरः कुल विहार एव

स्थिति स्वदीये नट एव भूयान् ।। रागिनी राम

कली ताल ॐ विस्नुपद । नैंन भरि देखि अव

भोन तनया ।। इति अस्थाई । केलि पियसों करैं

भव रत वही परे श्रम जलनि भरत आनंद मनया

रंगनरा । अथ आभोगः । चलनि देखी होइलेनि

हेरा वनकौं वेद श्रीवल्लभ लवे लाउङ्दलराउन ॥
रागिनी रामकली ताल ३ विस्लपद । व्रजपति
कृष्ण वल्लभे कदा नवचरण सरोरुह सीतलगास्य दंमे
रतिप्रस्थाई । नव नटराज बालका कदाहं सक
ल निजं गगाना मुदा करिष्ये ॥ इत्येनरा । अथ
आभोगः । हेरावने बारु कृह ङने मन्मनो रंथे

रा॰ग॰
३४

34

कहत वारं वार सवन के अधार धन निर्धनके ॥ इमे

नरा ॥ अथ आभोगः ॥ लेत जमुना नाम देत अभै

पद स्याम रसिक प्रीतम प्रिया वस जो जिनके ॥

पियकौ मोहि इन बिना रहति नहि एक छिन या ॥
रसिक प्रीतम दास करन जस ना पास मानो निर्द्धन
न कीहै ज्यौं धन या ॥ रागिनी रामकली ताल
विस्नपद । स्याम सखा दास जाको नाम इनके ॥
इति अस्थाई । निस दिन प्राण पति आय हियमैं ब
से जोई गावै सुजस भाग तिनके ॥ एहि जगमें सार

रा॰रा॰
३५

35

कृस्नदास प्रभु गिरिधर न परवानि होतन प्रान ॥

रागिनी रामकली ताल ३ षट्पदी कृस्नजीके ॥

निपट छोटे कान्ह सांनि जननी कहूं वान ॥ इतिश्र

स्थाई होत जब समदाइव करत तव सिख भाइ एको

नपाइके नैन भरि भरि कान ॥ इअंतरा आभाभो

ग॰ देखि रस रीतिकी प्रीति विपरीति गति मति मोन

रागिनी रामकली ताल ३ षट्पदी ॥ बोलत कोक

कला निधांन ॥ इतिपुरुष्याई मम वचन सुनि उठि च

लहि सखि छांडि सुंदरि मोन ॥ इत्यंतरा· प्रथमाभोगः

नव नाम सहित निकुंज महं पीय करत मुरली गांन ॥

केलि कौतुक रसिकनी तिय सुनि हिदे किनि कोन ॥

सेस रजनी बसत उडु पति जनकि भयो बिहान ॥

रा·गा·
३६
36

स्याम सुंदर रैनि कहां जागे ॥ इतिध्रुपस्याई देवि वि

न श्रग माल अधर अंजन माल जावक लगो

गाल पीक पागे ॥ अंगनरा ॥ अधश्राभोग बोल

डग मगी अति सिथिल बैन सबनो नरे बोल

उर नखे नि दागे ॥ गड्यौ केकन पीठ निपट बिहू

वल दीठ सबैरी लालनही पलक लागे ॥ कहिये

छाडि संग लगी रहो निसि प्रात ॥ जातनही विसरि
देखि वदन जतन परि समझि कहुं वेद देखें कमलहु
विगसान ॥ उपन चूंग रजवै लाल जस मनि हृदे उजकि
धसि धरनि पांउ धरि साव किलकात ॥ मनहुं आषाढ
घन वादरी सरन जिहोत आनंद सब फल प्रति जल
जात ॥ रागिनी रामकली ताल ४ ॥ घटघटी

रा॰ग॰
३८

37

नि सै नि प पै म प प म ग रे सै म प नि

पटी पलटि परे पट उट परे आभरन ॥ सिथिल अंग

सै नि प पै म प पै म ग रे सै म पै

अंग सबहिं देखियत निसाके जागरन ॥ नवग्रीया

नि सै नि प पै म प पै पै ग रे सै म प नि

संग प्रहर चारो पलन पाप परन ॥ चत्रभुज प्र

सै नि प म प पै म ग रे सै

भुजी निर निरन कियो रति पति शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ मोहन व

पै प पै म ग म प नि सै नि प पै

सन हमारे दीजे ॥ इतिश्रस्थाई वारने जाउ सुनो नंद

सोचि वात कारे जीय सक वात कौन त्रियजाके प्रत

राग रागे ॥ दास क्रेमनलाल गिरि धरन पते पर क

रन कूठी सौंह मेरे आगे ॥ रागिनी राम कली

ताल ३ षट्पदी ॥ भले आए भोर गिरिवर धरन ॥

इतिअस्थाई अरुण नैन जंभात आलस धरन डग

मगे वरन ॥ इत्यंतरा अथआभोगः पाग लट

रा॰रा॰
३८
38

रागिनी रामकली ताल ३ खलफाखेना षट्पदी

लोलन जागत रैन विहानी ॥ इतिउग्राहः ॥

दैवन पंथ अंखियां ग्रंति ह्नारी कहे लाल रंगि

मानी ॥ इतिअन्तरा ॥ अथआभोगः कहो का

लकै रहे लाल सखिन संग एरव विविध कहानी॰

रंग अनंग सरत विन आवत बनिया श्रीयकपिरा

नैंदन मीनल गन नन भीजे ॥ अथ आभोगः कौं

न स्वभाव हग्यां अन श्रीसर ऊनवानन कैसेंजीजे ॥

स्वनि ऊखपावे बज महर जसो मनि जाउ कहै अव

हीजे ॥ पसव अवलाजल मौऊ उचारी दारुण ऊवे

कैस सहीजे ॥ प्रभ वल राम हमदासी निहारी जो

भावे सो कीजे ॥ इति आभोगः ॥ ॥

रा.रा.
३९

39

हारें आवज सभा जवि रही निकसि वैनहि पाउ ॥ वि
न गये पति वने छुटे हमे गोकुलगाउ ॥ मधामगा
न सरोज आनन ललिन लैले नाउ ॥ स्वरहि ल
गन कठिन मनकी कहो काहि सुनाउ ॥

रागि रामकली ताल ३ ॥ षट्पदी । लाल रस
मसे नैंन आज निसि जागे ॥ इतिअस्थाई अंति वि

नी ॥ भोर भये आए मोरे गृह देखत सखी हिरानी·
रसिक प्रीतम दोऊ अंखियां अरुण भए कहो क
हां रैन सिरानी ॥ रागिनी रामकली ताल रूपक
षट्पदी ॥ किहि मिस जंगमनी के जाउ ॥ इति
अस्थाई ॥ सकल साख निधि साख निरखिके नै
न तृषा बुझाउ ॥ इत्यंतरा· अथ आभोगः ॥

ग·गॅ
५·

४०

२य २पि २मे २गं २रे २सा
तिकरग्रातो ॥

सालश्ररमान श्रकणा भय रति रनके रंग पारो ॥

श्रनेतरा । श्रथ आभोग: वेदर श्रयाम रुभगाता

श्रटपरी श्रेग श्रेग नाव लन दागे ॥ मानरूकोप

नि दरि सन्कारव मरमाथ भय श्ररिभागे ॥ वजर

भंज श्रभ गिरि परन श्रधिक ब्रवि वेदन भरक

टी लागे ॥ मानरू मन्मथ काप भेट परि रयो जो

रा·रा
४१
५१

सबके प्रभु दरस दीजे ग्रहन कीरन कुई ॥ ॥
रागिनी रामकली ताल ४ षट्पदी मैया तेरे
लालको माख देखनहो आई ॥ अनिरुध्याई का
न्हि माख देखि गई दधि वेचन जानहि गयोहे वि।
काई ॥ अंसनरा ग्रथ्यग्राभोरा: दिननें हूनौ दोम
लाभ भयो गाउनि वक्षिया जाई ॥ आईसवे छेभा

रागिनी राम कली ताल २ षट्पदी कृष्णजीके

मोहन जागिहौं वलि गई ॥ इनिप्रस्थाई ग्वाल

वाल सव द्वार ठाढे वेर वनकी भई ॥ इसंतरा ॥

अथ आभोग पीत पट करि दूरभाववैं छाडि दे प्रव

गई ॥ अति अनेदिन होत जसुमति देखि इतिनिन

नई ॥ जागे जंगम जीव पशु खग और ब्रज सवई ॥

रा॰रा॰
४२

42

आभोगः गालीजसोकरी एकजनीकी भेट भयोभ

ह भेरो ॥ अंकदे चली सयानी ग्वालिन हरिकों वद

न फिरि हेरो ॥ प्रानही मंगल भयो सावीरी ह्वैहे स

ब काज भलेरो ॥ परमानंदप्रभु माव निरखत मि

टो भव सागर फेरो ॥ रागिनी रामकली ॥

ताल ८ षट्पदी ॥ हों वलि वलि जोउ कलेउ

य स्याम्यकी गिरि पर देहु जगाई ॥ सुनि प्रिय
वचन बिहसि उठि बैठे नागरि निकट बुलाई ॥
परमा नंद सयानी ग्वालिन चली संकेत बनाई ॥
रागिनी राम कली ताल ३ षट्पदी ॥ लाल
को दरसन भये सवेरो ॥ इति प्रस्याई बड़न ला
भ पाउंगी माई दह्यो बिकैहै मेरो ॥ इतनेतरा प्रय

रा॰गा॰
४३

43

जै ॥ रागिनी रामकली ताल षट्पदी ॥

जयति आभीर नागरी प्रान नाथे । जयति व्रज राज भ-

वन जसोमति ललित दैनन विनोद मिश्री सुहाथे·

इति अस्थाई जयति पान परभान दधि श्रीदामा

सेग अखिल गोधन हेद चरै साथे ॥ इत्यन्तरा ॥

अथ आभोगः ढोर रमणीक हेदा विपिन सुभस्थल

कीजे ॥ इतिश्रस्थाई खीर खांड घृत अति मीठो
है अबको कोरवक्र लीजे ॥ अंतरा ॥ अथश्रीआभो
गः वेनी वढे स्रनो मन मोह्न मेरो कह्यो जो पनी
जे ॥ ओछो हूय सय थोरी को मान छूंट जो पीजे ॥
हौं वारीया वदन कमल पर भ्रंवरा प्रेम जल भीजे ॥
बहुरौं जाय खेलो जमुना तट गोविंद संग करि ली

रा·रा·
४४

44

वि मदिन भई मनहि मन कहति आये ववन भयो
आना ॥ इंपतरा । अथआभोगा । नैन भर सात
अति वार वार जेंमान कंठ सो लगि जात हरष गा
ना ॥ वदन पौंछियो जमुन जल निसों धोइके क
ह्यो मस काइ कछु खाहुनाना ॥ दूध औटौ आनि
अधिक मिश्री सांनि लेहु मांखन पांनि आगा दाना·

हेटरी केलि गुण गूढ़ गाथे ॥ जयति तरनिजा त

ट निकट रास मंडल रच्यो ततनता थेई थेई ततनता

थे ॥ चत्रभुज दास प्रभ गिरिधरन वङ्गरि प्रभुश्री

विठ्ठल प्रकट ब्रज कियो सनाथे ॥ रागिनी राम

कली ताल ॐ षट्पदी ॥ लालहि जगाउ ब

लि जाई माता ॥ इतिश्रुस्याई निरखि माख वेद ब

तनी अंगकीगति देखि जीयत जानी ॥ उपटि
केकन पीठ वक्र बिहु बल दीठ ईठ नालकी कानी·
पाणि पलव अधर दसन सौ गहि रही अरथ बेन
बोलि वचन हार मोनी ॥ सूरप्रभ अेक भरी श्रोण
पति नागरीन बल नागार उरझवालि मोनी ॥
रागिनी रामकली ताल ८ षटपदी ॥ जैये त

सूर प्रभु कियो भोजन विविध भांति सौं पियो पय
मोद करि चूंट साना ।। रागिनी रामकली ताल
षट्पदी ।। राधिका श्याम नैन देखि मुसका
नी ।। इतिअस्थाई । हार बिन गुण लेख अधर
अंजन रेख नैन ते मोर ललन रान बोनी ।। इत्यंतरा
अथआभोगः ।। पाग लट पटी बनी उरह छूटी

रा॰ रा॰
५८

56

ब्रज तियन में कौन सी नारि वह जाके तुम लाल
गुन गान गावे ॥ चतुर्भुज दास प्रभु गिरि धरन
काहे कौं करत झूठी सौंह मेरे आगे ॥ रागिनी
रामकली ताल ३ षट्पदी ॥ नैन उनींदे
भए रंग राते ॥ इति चुगलाई मनहु गुलाल
उरझ पर सजनी फिरत भ्रमर मद माते ॥ इसे

ह्रै जह्रै रैनि जागै ॥ इतिष्ट्रस्थाई । वनी विन

गुणमाल ओठ अंजन भालहै उर लग्यो गेउ पी

कपोलै ॥ इसंनता । पुष्पप्राभोगः । आरक्त नै

न अति सिथिल सब अंग गति उग मग नग विन

ह्रै पलक लागै ॥ चपल वानर फीठ उपटि कंक

न पीठ देखियत उर मोजन खिन दागै ॥ सकल

रा॰रा॰
४८

47

मन म्रग वेधौं मोहन नैन बांनसौं ॥ इतिश्रस्याई ॥
गूढभावकी सैंन श्रवानिकत किनास्यौ भ्रकुटीक
मानसौं ॥ इंगनता । अथश्लोकः ॥ प्रथम नाद
बल बेरि निकट ले मरली समक स्वर वेधानसौं॥ पाछें
वे कवितें मधुरे हंसि चात करी उलटी स्वरंनसौं ॥ ब
नभंज दास पीर पानन की मिटनन ओषध ग्रंनसौं ॥

नरा। ग्रथ्थग्राभोगः प्रेम पराग पोंखुरी पल दल
प्रफुलित मदनल नाते ॥ सदा सुवास विलास वि
लोकनि प्रकट प्रेमके नाते ॥ नैसिये मारुत मंद
जन्हा वरि मिलत सुदिन छवि नाते ॥ सोचे स्तव
श्याम मानिनि निज हित करिकेलि कलाते ॥
रागिनी रामकली नाल ४ षट्पदी कृसजी की

ते बिनै सि खन नरा खेलि केउ लगाइ सुंदर श्यामसु
भग॥ मडुवोलीवतैबान मंगिन वनीन खोनभ
जन भाव जैंसैं जनावन बाल खेल ॥ चतुर्भुज प्र
भु गिरि धरके बाल बिनोद नेद मन खे देखे ढाके
ढगढगा ॥ रागिनी राम कली ताल ३ षट्प
दी उपमा धीरज नजो निरखि छबि ॥ इतिश्रुग्या

कैकै सबे नवही उर अंतर आलिंगन गिरिधर सङ्जो

नसौं ॥ रागिनी रामकली नाल ८ छटपदी ॥

अंगुरिया छाडिरे गति अरस परस ॥ इति गुणाई

नूपुर बाजत नौंनौं परणी परत पग ॥ इंपतग ॥

अथ आभोग: कबहुं कुंजसौंदा माहिं भुज पसारि

हंसि उग मगाइकें उलटि उरग॥ जननी मुदित मन वि

रा॰रा॰
४९
49

रागिनी रामकली ताल ८ षट्पदी । सांझोरी बे
रिक माई कौंन को किसोर ॥ इति ध्रुवस्थाई सांवरे ब
रन मन हरन वेसी धरन काम करण केसी गति जोर
इत्यंतरा । अथ आभोगः पवन परसि जात चपल हो
न देखि पियरे पटको चटकीलो छोर ॥ सुभग सा
वरी छोटी छटातें निकसि आई वेछबीली छटा कौं जे

ई कोटि मदन प्रभुनैं बल हास्यो कैउल तेज छप्यो

रवि ॥ इसेनरा। अथ ध्यानभोगः खंजन मीन मृग

जहैं जैते हीन रहे क्यौं हदवि ॥ गिरिधर पटन रह

महिल जावत सकल ननहीं खोटे कवि ॥ ईषद हा

स दसन इति निरघन वज्र सिखेरस ऊखानैं सुरशण

मलीला वधुका क्रियो पट नर मेटि बिरानैं ॥

रा-मा
५०
50

हमंतनरा । अथत्र्याभोगः । सव वनराई विसरि जातहै
खान पान की नात ॥ विन देखे छिन कलन परतहै प
ल भरि कलप विहात ॥ सुनि भामिनिके ववन मनो
हर साखि मन अति सकुचात ॥ वनभंज प्रभु गिरि
धरन लाल संग सदा वसो दिन रात ॥ रागिनीरा
म कली नाल ॐ षट्पदी । ववर वारु वेड़ा वली

सो छबीलो भोर ॥ सकुलि पाइनी सवारि हारहा होमे
री आली कहा नाउ कोहै चिन चिन को चोर ॥ नेददा
सि जाहि वाहि वकवौं थी आइ जाइ भूल्योरी भवन
गवन भूल्यो रजनी भोर ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । करन हो सवे सयानी वान ॥ इतिश्र
प्याई जोलौं देखे नाहिन सुंदरि कमल नैन ससिकान

त मुरलि का नाद मोरे ॥ सुनि कुसुमदाम सुभ लग्न वद
यन छबी लाल गिरिधरन सौं हाथ जोरे ॥ रागिनी
रामकली ताल ३ षट्पदी । देखो मेरे भागकौं सु
भ घरी ॥ इतिश्रुपदाई । नवल रूप किसोर मूरति के
ठ ले भुजधरी ॥ इमंतरा । अथआभोगा जाके चरण
सरोज गंगा शोभले सिर धरी ॥ जाके चरण सरोज प

सुख चकोरै ॥ इति मुग्धाई अन्तमे चरण रति व्रज
जुवति भूषणो कमल लोचन नंद नृपकि सोरै ॥ इति
नरा । अथ प्राभोगः । मानि मेरो कह्यो अति लाल र
सरीति कौं करावति सखी वड्डनि होरै ॥ मिलेकि नि
यार अब कुंवर श्रृंगार रत्न रसिक वर भूपाल विन तो
रे ॥ नव रंग कुंज महेल बनो महित नाथ कुमति क

रा॰रा॰
५२
52

रहती करि कांनि ॥ अब हम पैकौं सहीपरति है
मणि मानिक की हांनि ॥ उह विवेक वचन चा
तुरी सर्वस लियो चुराय ॥ सूरदास प्रभुके गुण
औगुण कासौं कहिये जाय ॥ रागिनी राम क
ली ताल गीत षट्पदी । यत यह राधिका के
वचन ॥ इतिग्रस्याई । सुभग सीतल अतिस

र सत सिलास नियेत तरी ॥ जाके वदन सरोज निर
खत आस सगारी सरी ॥ स्र प्रभके सेग विल सत स
कल कारज सरी ॥ रागिनी रामकली ताल ३ षट
पदी। गोपाले माई वारे हीतें टेव ॥ इतिग्रस्थाई ॥
जानैं नही कौंन पैंसीवे चोरीके खल खेव ॥ इसेन
रा। अथ आभोगः कवरंक डरते मावन रवोते सुनि

ल गीत षट्पदी । यन यह गायिकाके वरन ॥ इति
अस्थाई । सुभग सीतल अति सुकोमल कमलके
से बरन ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः । नव वेद चा
ह अनूप राजत विविध सोभा धरन ॥ कुंजनि नू
पुर कुंज विहरत परम कौतुक करन ॥ रसिकला
ल मनमोद कारी विहर सागर तरन ॥ विबस

कोमल कमल केसे बरन ॥ इतिश्रेनरा । अथा
आभोगः । नखचंद चारु अनूप राजत विविध
सोभा धरन ॥ झणित नूपुर कंज विहरन परम
कौतुक करन ॥ रसिक लाल मन मोदकारी वि
हर सागर तरन ॥ विवस परमानंद छिन छि
न श्यामजीके शरन ॥ रागिनी राम कली ता

आम जीसों बांधि अपनी पवन ॥ सूरके प्रभु तरन
तारन राखि अपनी शरन ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ षट्पदी ॥ बहू जोत बहि मान परि आवे ॥
इति अस्थाई । सुंदर श्याम बहुरि मनभावे कैं अंबुज
बदन दिखावै ॥ इत्यंतरा । अथ आभोगः । नव
लग मान करहु कोऊ कैसें जब लग वह दरसन न

परमा नेद छिन छिन श्याम जीके शरन ॥ ॥

रागिनी राम कली ताल गीत षट्पदी । वढि वढि

बान लागो करन ॥ इतिश्रस्थाई । श्याम सुंदर मद

न मोहन आप तेरे चरन ॥ इत्यंतरा । अथआभोगः

उदित उपर चिकुर छूटे चिकुर उपर ढुरन ॥ काम

को दल साजि आई आउ देहे [illegible] लरन ॥ विहर को से

किति हन फुन वानी ॥ इमंनरा। अथयशोमोगः
सुतके कर्म गावति आनंद भरि वाल चरित्र जानि
जानी ॥ श्रम जल बूंद राजे वदन कमल पर मन
हु सरद वर खानी ॥ पूत सनेह छुवात पयो धर
प्रमुदित अति हरखानी ॥ गोविंद प्रभु तुट हन
चलि आप पकरि रई मथानी ॥ रागिनी राम

हि पावै ॥ दहि परमेन मथु कर निहि छिन महज

सरोज हि पावै ॥ त्रिभुवन मांझ होउ वर्दै जवति

श्वरज पयहि दफावै ॥ जेमन दास यश गोवर्द्धन

धर जल मरजादा फावै ॥ रागिनी रामकली ना

ल ३ षटपदी । अहो दधि मथति चोषकी रानी ॥

इति पसयाई । दिव्य चीर पहरे दछिन को कटि किं

रा॰रा॰
५६
56

प्यारी ननदैनै ॥ रसिक टरौ जिनि दसा स्यामकी कब
हूं मेरे मनतैं ॥ रागिनी रामकली ताल ३ षट्
पदी । चरण कमल की चेरी तेरी छांडहु लाल नेह
के ॥ कैसो हूं होन कहा किनि लीयो दीयो न कबहूं
बचन बदन अर बिंदके ॥ देखन साखा साखी जन
सगरी चरित चपल ब्रज चंदके ॥ लाल नस ऊचन

कली नाल ३ षट्पदी । लटकन आवन कंज भव
नैनै ॥ इति अस्थाई । फरि फरि परत राधिका ऊ
पर जागर सिथिल गवननैं ॥ इसेतरा । अथ आ
भोगः । चौकि परत कबहूं मारग बिच चले खुरो
य पवननैं ॥ भपड स्वास भरम राधाके सकुच न
लो सरवननैं ॥ आलस मिस प्यारे नहोनहेने ऊन

रा॰रा॰
५७
57

रसेनतरा। अथकृष्णभोगः॥ हेदर श्याम कमल दल लोचन हमहैं दासी तिहारी॥ जो कछु कहो सोई हम करिहैं चरण कमल परवारी॥ ग्रेग ग्रेग केपत मन मोहन विनती सुनहु हमारी॥ सुर दास प्रभु रसिक सिरो मनि तुमजीते हम हारी॥
रागिनी रामकली ताल षट्पदी॥ चर्चरी।

ग्रेवरांपै बन पारन पावन विविध ग्रट पटे फेटकी ।
मटकी खसत हसत सब ग्वालिनि निरखति हारे
छेटके ॥ रसिक सदा मन बसो विविध गुण रसनि
पि आनंद केटके ॥ रागिनी रामकली ताल २ घट
पदी ॥ हमारो ग्रेवर देहो मुरारी ॥ इति ग्रस्याई
लेकर चीर कदम पर बैठे हम जल मांझ उघारी ॥

गी·गो
५८
58

दि वङ्गनक्क व्रत वासना भेगा भव जलधि तरणे ॥ वद
न हरि दास इति निज चरण माञ कृत गोकुला धीशा
पद कमल वरणे ॥ रागिनी राम कली ताल
षट्पदी । चर्चरी । जयति राधिका रमण वर चरण
परिचरण रति वल्लभा धीश स्वत विठ लेश ॥ इतिश्र
स्याई ॥ दास जन लौकिका लौकिके सवैया·कैवबि

रुचिर नरु वल्लभादीश वरणे ॥ इतिश्रुत्याई । अस्तमे

सर्वदा संदरा हाति जगन्मोहने हदि हता विहित कर

णे ॥ इंपानरा । अथश्रीभोगाः विहित माया वादवा

दि देव जादि जन संगाज निनात्म जनकु मति हरणे॰

अविल साधन रहित दोष शत कलष मति विमति

भर भरित निज दास शरणे ॥ अंजसा कामको पा

रि दास गति निज वलेशे ॥ रागिली राम कली ता
ल ॐ षट्पदी ॥ श्रीगोकुल नाथ निज वश्य
मो ॥ इतिश्रस्याई। भक्त हेत प्रकटे श्रीवल्लभ ज
गतै तिमिरज हरयो ॥ इंपंतरा। अथ श्रीभोरा: ॥
नंद नंदन भए नव तिरि गोप ब्रज उद्धरयो ॥ नाथ
विठल सवनकैकै परम हित प्रन सरयो ॥ श्रीतिश्र

तो दयति हृदय देशे ॥ इत्येतत् । अथ आभोगः ॥ स्था

पयत मानसं सतत कृत लालसं सहज सुवेष माहु विर

रूप वेशे ॥ भाल गत तिलक मुद्रा दिशो भास हित

मस्तका वद्ध सित कुसल केशे ॥ सहज हासादि युत

वदन पंकज सरस वचन रचना परा जित सुदेशे ॥

अखिल साधन रहित दोष गत सहित भक्ति दास ह

60

गाय अपार भव निधि तारि अपनौ करयो ॥ दास मा
धव जास देव चरण शरण परयो ॥ रागिनी राम
कली ताल षट्पदी ॥

ग्वाल बाल खेलन कौं गोरंभन ह्वै होइ ॥ ब्रज ज
न सब ठाढी मारग देखन प्रति आवत सब कोइ ॥
उठि बैठे लए गोद जसोदा सुंदर स्याम निहे लोइ ॥
रसिक प्रीतम लगि गोरैं जननि के मांगत रोटी रो
इ ॥ रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥
डग मग चलति अब रही भीति ॥ इति श्रुस्याई

रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥ भोर
भयो जागो हो ललना कहा तुम अजहूं रहे हो सोइ
इति अस्थाई पीओ यार अपनी थोरी की जैसें देह
वल होइ ॥ इत्यंतरा अथ आभोगः बैनी गुहे देउ
दृग अंजन मसि बिंदुका भाल धोइ ॥ हसत बदन
ब मदन निहारौं नान्हौ नान्हौ दतियां दोइ ॥ देखत

रा·रा·
६४
64

नंद कुमार सबन संग लीने सरद विमल की रानी·
कुंज दास गिरिधर पिय के संग अधर सुधारस
माती ॥ रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी·
ग्वालिन पिछवारे है बोल सुनायो ॥ इतिशुस्या
ई । कमल नैन हरि करन कलेउ कौरन सखेलौं
आयो ॥ इंगतरा । अथप्रभातीरा: । मैया एक गा

नवनि ऊजने राधा भांमिनि ग्रहण उदै वरजानी

उपेनरा । ग्रथ्यग्राभोगा । रतिकी कलि स्वमिरि

मग नैनी वार वार मस कानी ॥ वदन जोतिने

स्वनिरी भामिनि मेटन उउ पनि कोनी ॥ निसके

चिन्ह प्रकट देखि यनहैं काम केलि जल कानी ॥

प्रीतम प्राण रतन संपुट ज्यव भेटि जग ईक्कानी ॥

गा·रा
६५
65

नीरवालिन उलटि ग्रेक गिरि धर पिय पायो ॥
रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥ मोहन
ननिक देरी माय ॥ इतिअस्थाई ननिक करपरन
निकरोटी मोगन चरण बलाय ॥ इत्यन्तरा । अथआ
भोगः । कनक भूमि परननि करेषा करन पकरो
धाय ॥ केपियो गिरि सेस संकोच दयि हेत अकुलाय·

य बन गाटे बछरा छाई बसायो ॥ बेनु नल ईल ऊ
ट नहि लीनी अरबराय कोउ सखान बुलायो ॥ च
कित नैंन चहूं दिस बिन बन सख्य इहै किधौं सप
नो पायो ॥ फले अंगन मानर सिक बर त्रिभुवन पर
रस छकनि छायो ॥ मिलि बैठे संकेत सदन मैं
बिबिध भांति कीनौं मन भायो ॥ परमानंद सधा

चोरि मन मांखन जो मेरे घनहोरी ॥ रागनट ॥ अथ
आभोगर। चोथो कंचन खंभ कलेवर उभय भुजा ह
ग डोरी ॥ ताकौं कठिन कठोर ऊचन विच सकेन
कोउ छोरी ॥ अधर दसन खंडौं रस गोरस कुंबेन का
ऊ कोरी ॥ काम देउ देखो पर चर को नाउन लेइव
होरी ॥ नवकुल कोनि घानि तिरछी भई हमा घ

मेरे मनके ननिक मोहन लागो मोहि वलाय ॥ ननि

क स्वाव परत निक वनियो बोलनहैं बनराय ॥ जस

मनीके भाग जीवन धन लीयो उरल पटाय ॥ नंद

ऊवर गिरि धरन ऊपर सूर बलि बलि जाय ॥

रागिनी राम कली नाल ३ अष्टपदी ॥ आज ह

रि एकरवा पाय चोरी ॥ इनि ब्रजनारी लेगयो चोर

रा॰ गा॰
६०

67

कोरे लगि देख्यो मेरी ग्वातन आयो ॥ वेनीकी कव
गह्री वामरी उघट माझ दर वायो ॥ मत रोवो नम
मैं कौन कहत है लेउ छंगा झल गायो ॥ श्रीमखवैतै
उघरि गई हेदतियो नव हेंसि कंठ लगायो ॥ परमा
नंद प्रभु प्राण जीवन धन विसद विमल जस गायो ॥
रागिनी रामकली ताल गीत ध्रुपदी । मोहि द

प राय किसोरी ॥ सिव पर ह्राथ धराइ सूर प्रभुसो
च सोच सिर फोरी ॥ रागिनी राम कली ताल ३
अष्टपदी । मारवन चोरसीमें पायो ॥ इतिअस्थाइ
जैयत कहो जोंन कैसे पैयत वडुत दिन नही खोयो
इतिअंतरा । अथआभोगः । होंज कहत निसी होत कहा
है नित उठि भाजन लगन कुक्कायो ॥ वडुत वार

।ताल ३

श्रीजमुनाजी तिहारो दरस मोहि भावै ॥ श्रीगोकु
लके निकट बसत हैं लहरनकी छवि आवै ॥ सुख
करनी दुख हरनी श्रीजमुना जो जन प्रात उठि न्हावै·
मदन मोहन जूकी खरी पियारी पटरानी जू कहावै·
वृंदा वनमैं रास रच्यो है मोहन मुरली बजावै ॥ सूर
दास प्रभु तिहारे मिलन कूं वेद विमल जश गावै ॥

यि मथन देव लिगाई ॥ जाउ वलि वलि वदन उप
र छाडि मथा नीरई ॥ इति श्रस्याइ लालेदेइं नव
नीत लौंदा आरिकि नत मठई ॥ इत्यंतरा । श्रथाश्र
भोगाः खनेहेति विलोकी जसुमती प्रेम उल किन
भई ॥ लेउ छंगलगाय उरसौ प्राण जीवन जई ॥
वालकेली गोपालकी व्रज श्राम करन नितनई ॥

रि भजन कीनो प्रथम हेमंत के मास ॥ पवर होइ
नेद सुत मेरे ब्रज राखौ इहिं आस ॥ तबही चीर ह
रे हरि नागर चढि कदम की डारि ॥ परमा नंद
प्रभु वर देवै कोउ यम कियो मरारि ॥ रागिनी
राम कली ताल ३ अष्टपदी । ग्वालिनि अपनै
चीर लेहु ॥ इति अस्थाई । जलतै निसरि निकट

रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी । हरि जसगा
वति चली ब्रज सुंदरि श्रीजमुना के तीर ॥ इति अस्था
ई । लोचन लौंने बाहु जोरि करि श्रवणनि ऊल कन
वीर ॥ इतिअंतरा । अथ आभोगः । वेनी सुथिर वारु
कांधे परे कटि तट अंबर लाल ॥ हाथनि फूल लीयें
डलीया भरि अरु मुक्ता मणि माल ॥ जल प्रवेश क

रा॰ रा॰ ७

70

स्तर स्वभाव हमारो कत तउर पति हो काम भय ॥ के
सोये भांति भजे कोउ मो कैसे सबै संसार जय ॥
रागिनी राम कली ताल ३ अष्टपदी ॥ स्वामि
रे श्री विठलेश कुमार ॥ इति अस्थाई । अति अ
गाध अपार भव निधि भयो चाहो पार ॥ इति अन
रा । अथ आभोगः । मै बलि रहत करुणा सिंधु

कै दोउ कर जोरि कैं सीस देहु ॥ इत्येनता। अथ आ
भोगः। कतहो सीत सहत अज सुंदरि होत असि
न ह्रस गात सबै ॥ मेरे कहे आनि पहिरो पट इत
नो अंग विधि हीन अबै ॥ हो अंतरजामी जानत
सबनकी कत डरावत लाजकैं ॥ करिहो स्रवन
काम कृपा करि सरद समैं ससि रानके ॥ संतत

ཀ་ཀ་

༧༢

कोमल सदा चित उदार ॥ गोकुलेश हृदे वसो म
म मन पाल निहाल ॥ माल तिलक नन जीनक
डे परी जदपि ड़कार ॥ श्रेत भक्तन दीयो धीरज भ
प पद दातार ॥ चार जुगमै विसद कीरति भक्त
हित अवतार ॥ नव किसोर कल्यानके प्रभुगा
डे वारंवार ॥ रागिनी राम कली ताल । शुभ्र

गोप गोपीन बल प्रेम रति वेदिका तट मंदिर रहत
जैसैं चकोरी ॥ लहरि भावरि ललित वल्लिका सु
भग व्रज वाल व्रत हरना रास फलदा ॥ ललित
गिरि वर धरन पीयक लिंदनंदिनी निकट कुल दा
स विहरत श्रवलदा ॥ निरखि हरखि व्रज जुवति
वोध भरति ॥ थकित जित तित भ्रमर मुनि गान

रागिनी रामकली ताल ४ अष्टपदी ॥ नमो नति
न नया परम पुनीत जग पावनी हृदय मन भावनी
रुचिर नामा ॥ इति अष्टपदी अविरल स्वरव दाइनी स
व सिद्धि हेतु श्रीराधिका रवन रति करन श्यामा ॥
रंजनरा । अथ श्लोकः । विमल जस्य वन नवका
नने मोद युत ललित अतिरम्य श्रीय व्रज किशोरी ॥

नेऊ उतारि ॥ केहरी पजनील मणि मय माल रची
से वारि ॥ नील गिरि वर गरल मानों लाय लई म
दनारि ॥ वदन रजतन श्याम मोहन शोभ इहि इन
हारि ॥ मनहु अंग विभूत राजत शंभ सोई मधुहा
रि ॥ चिद्रम पति जम्ब मनि के आगें असन कों करे
आरि ॥ सूर दास विरंचि जाको जपत जम सवरे आरि॰

नंद लाल निहारि ॥ बिन बचन सिरके सलट बंदेरि
सा छुटकी जारि ॥ सीस पर जानो जटा धरि सिव
रूप कियो त्रिपुरारि ॥ रुचिर रचित ललाटके सरि
बिंदु सोभा कारि ॥ रोस मनउ त्रतीय लोचन रहे
रिपुजन जारि ॥ कुटिल रचिन खेहिये हरिकें सुभ
गा इरि धन हारि ॥ ईसजन रजनी सराख्यो भाल

रा॰वा॰
७४
74

य ॥ उरत लालन झुलत पलना खेरैदेन झुलाय·
जमला अर्जुन तोरि तारे हृदे प्रेम बढाय ॥ झटक
तान पलास पलव देउ देत दिखाय ॥ कीर पिंजरा
देत श्रेउरी लेत श्याम भजाय ॥ वका स्वरकी चोंच
फारी दुष्टि अव रज लाय ॥ विनादीपक सदनमें
हरि नेकु धरतन पाय ॥ अचा स्वर स्वाव पेटि निक

रागिनी रामकली ताल ३ अष्टपदी ॥ बलि ब
लि चरित्र गोकुल राय ॥ इतिध्रुवस्थाई । दावा नल
को पांन कीनो पीवन हूय सिराय ॥ इति अंतरा । अ
थआभोगः । पूतनाके प्राण सोखे दहे उखल पदा
य ॥ कहति जननी हूय जारन खीझि कछु वन
खोय ॥ खिण बनै अकासतै गहि सिलाय टको अ

रा·रा·
७५
75

लागत पाय ॥ घोष नारिन संग मोहन रच्यो रास ब
नाय ॥ कहति जननी ब्याहकी तब लजत बदन ड
राय ॥ वृषभ भंजन हतन कैसी हन्यों शकट फिरा
य ॥ भजन माखन समेत मोहन देखि आई गाय·
सेस महिमा कहिन आवे अनेक रसना पाय ॥ ५
करमना सूर कहा कहे अंग अंग निन भाय ॥ ॥

मे बाल बच्छ जिवाय ॥ हरे बालक बच्छन बच्छन
हेत तेरी माय ॥ फूटि पत्र जब रहत बन मे द्रुम
नि ढूंढन जाय ॥ लियो हरि नाग कारो देखि
श्यामसुराय ॥ तिनि काली फणनि ऊपर सम ता
ल बजाय ॥ यक्यो गिरि वर दोहनी करत बारे
पिराय ॥ सकट भंजन समन ऊव जग कठिन

रा-गा
७६

76

कौं उठिस जोगी मानि मेरी निहोर ॥ लेहु ललन
बलाइ तेरी छोरि अंचल छोर ॥ बदन चंद बिलो
कि सीतल होत हिरदो मोर ॥ बैठि जननी मोद जै
बगला री गोविंद थोर ॥ रसिक बालक सहज ली
ला करत मोहन चोर ॥ रागिनी रामकली ता
ल ३ अष्टपदी । मानहु बात ललन मेरी ॥

रागिनी रामकली ताल गीत अष्टपदी ॥ हाहाले

उपको कोर ॥ इति अस्थाई । बहुत बेर भई है म

वे देखि मेरी ओर ॥ इत्यंतरा ॥ अथ आभोगः ॥

मेलि मिश्री हय ओल्योपी ओकैं हैं जोर ॥ अब ही

खेलन टेरि हैं तेरे ग्वाल भयो अति भोर ॥ जगे पं

छी डुम डुम निश्रनि करन लागे मोर ॥ खेलिवे

२८ ॥१॥

मेघान उदयो सूरज कमल बिकास ॥ माइके ब
नि बचन हेसि उर आइलगे गुपाल ॥ कीयो भोज
न दीयो अति सुवे रसिक नैन बिसाल ॥ रागि
नी रामकली ताल गीत अष्टपदी । खेलन मद
न सुंदर अंग ॥ रतिअभ्याई । जुवति जन मन
निरखि उपजन बिबिध भाव अनेग ॥ इत्येनरा ॥

इति अस्थाई। करौ भोजन राम भलो हौं जु मैया तेरी
इत्यंतरा। अथ आभोगः। दूध दधि नवनीत घृत
पक पक मिठाली प्यार ॥ कहा लोटत धरनिमें मेरे
लाल होत निअवार ॥ गोद बैठो हौं जि बाजंगाउं तेरे
गीत ॥ खेलिबेकों नाहि बोलत ग्वाल तेरे मीत-
कहौं जाकौं नाहि देरौं बैठे तेरे पास ॥ करौं दधि

रा·गा·
७८
78

अलौकिक बाल लीला कौंऊन जानी जाइ ॥ सुरप
नासौं महा स्वरे रसदेन रसिक मिलाइ ॥ रागि
नी राम कली ताल चर्चरी ताले । व्रजानंद के
द बोध पति भाग्य भवि जाते ॥ इति अस्थाई । रसि
क वर गोपिका पीनरस मानतेनव जय नमम ह
सि रुजाते ॥ अंतं । इमेनरा॰ अथआभोगः । हवि

अथ आभोगः। एकदि वल्लभा ऐंख्वैंचतन अपनी दि
स करजोर ॥ कबहुं वल्लभ भजन हरिकों जुवति
जनकी ओर ॥ देखि परबस भए प्रीतम भयो मन
आनंद ॥ नैंन आकुल भई व्याकुल गई लाज अमंद ॥
कोउ देखति गाहनिको उह मन छाडति गेह ॥ कर
ति भाया अपने मनको प्रकट करि निज नेह ॥ अति

गी·गो·
७५
29

निहित निज वाङ्गरति मत्त गज राज इव रुचिरे ॥ वि
रह विरहानले वारु शङ्कर वलन शीकरे रुप शामय
रुचिरे ॥ अरुण नवला पांग शर निहत ऊल वधूय
ति नव विलोचन सरोजे ॥ मम वदन सुध मासरसि
विल सत मनन मलस गति निर्जित मनोजे ॥ नेद
गे हाल वालो दिनस्वी राग मेक मेहद्र स्वर हत ॥

रदरहासगाल दमल परिमल लब्ध मधुपकुल म
वकमल सदने ॥ भ्रमरन चय गर्वि निर्वासना यर
सिंधु पायय मनो जाग्नि यामने ॥ स्मित प्रकटित
चारु दंत रुचि वदन विधु कौमदी हत निखिल
ताये ॥ विल सलिलता हृय कनक कल सदयो
मारकत मणि रिव उराये ॥ सुभग सुमखी कंठ

ग॰रा॰
८०

80

हू जयति हरत भाव विंते ॥ तीरथसी मेंतिनी विश्रुत

घटेहए केल निनद गर्जित स्व सिह सतते ॥ वचन

करुणा कृत दृष्टि दृशी रेगा नव जलद मपि जुरुस

हसिते ॥ रागिनी राम कली ताल चर्चरी

जयति श्री वल्लभ स्व वन उद्धरण त्रिभुवन फेरि नेद

के भवन की केलि ठोनी ॥ इति श्रुस्पाई ॥ ३४

व्रज वर कुमारिका बाहु हाट कलना सतत मा श्रयत
कृत लेख ॥ व्रज ह्लाद रमा रसिक ना रमा गोपना
ति शय रुचिरा लाप लीले ॥ नाहमी लगा जनित
कुसुम शर भाव भर ध्रुवनिभ प्रकट नर निखिले ॥
रुचिर कौमार चापल जय श्रीउग्या वल्लवी हृदयस्ट
हृगंमे ॥ प्रकट यन्निज नावेर शारवबै रसम शार मि

नकसे भक्तकौंस नेदसे याहीतें वसकीयो व्रज रा
सी ॥ मनहु इंद्रवजीति कुल सौंकरी प्रीति निरा
मकी चलिनी नित श्रुति विवेकी ॥ रहित श्रमि मा
नतें बडे सन मानके शील अरु दोन गोविंद टेकी·
सदा निर्मल बुद्धि ग्रह सिधि नव निधि द्वार सेवत
जहो भक्ति दासी ॥ राम राइ गिरिधरण जो नित श्रा

गिरि वर धरण सदा सेवन चरण द्वार ध्यावे वरण

भरन पोनी ।। इन्येनरा । अथ अग्रभोगाः । वेदपथ्यका

स सैंह्नुमान दाससे ज्ञानकों कपिलसे कर्म जोगी॰

साधु लछमन निपुन मद्ध ब्रज राज प्रकट स्वावरसि

मनो इंड भोगी ।। सिंधु सम गंभीर मिलन रंगा

नीर प्रीतिको जल तीर ब्रज उपासी ।। ध्यांनकों स

गी·गो
८२
82

नउ जनावे ।। इंप्तेनरा । बघ्युग्राभोगः ।। दंषिन

माया वाद वर्त्ति वदन धंसि विहित निज दास जन प

द पावे ।। इहि पद्य कथन रचिता नेकस ग्रंथ म

थिन भागवत पीयूष सारे ।। रास रवनी भावसन

न भावित हृदय सदय मानस जनि नमो दभारे ।।

निज चरण कमल धरणी परि क्रमण कृति माच

पावित वितत तीर्थजाले ॥ कल्प सेवन विहित धा
रणा गात शिलता लपित संदेह दासे कपाले ॥ निज
वचन पीयूष वर्षणे वित सतत साहित्य प्ररुष जन
मत्त शुके ॥ विविध वाचो शुक्ति निगम वचनो दि
नैरपिच हरित दुष्ट जन दुरके ॥ ईदृशे सति सि
रसि सर्वदा वल्लभे सकल कर्नीरि दयालौ ॥ कैवप

रा॰रा॰
८३

83

रि देवता भवति हरि दासके सकल साधन रहित
जन कृपालो ॥

रागिनी रामकली नाल ॐ जमुना के पद ॥ जमु

नसो नाहि कोउ औरदाता ॥ इतिगुसाई ॥ जेइन

की सरण जानेहूं दोरिकें नाहिकौ नेरहि छिन करि

स नाथा ॥ इसंतरा ॥ अथ प्रभोगः ॥ पहिउगाको

नरसावो नरसना एक सहस्र रसना कौंन दई विधा

ना ॥ गोविंद वलि तन मन धन वारनें सबनकी जी

रा·गा
८५
85

बन इनहीके हाथा ॥ रागिनी रामकली ताल
जमुनाके पट ॥ श्याम संग श्याम कैर हीरी जमुने
इतिअस्थाई ॥ हरत श्रम बिडंनै सिअ सीवहि चली
मानो आनंद आली रहीन भवने ॥ इत्यंतरा ॥ अथ
आभोग ॥ कोटि काम हिवारौं रूपनैंननि हारौं
लाल गिरिधरन संग करत रमने ॥ हरषि गोविंद

रागिनी रामकली नाल ॥ जमुनाके पद ॥ जगु
नसो नाहिकोउ औरदाता ॥ इतिग्रस्थाई ॥ जेइन
की सरण जानेहूं दोरिकें नाहिकोंनेहि छिन करि
स नाथा ॥ इसंतरा । अथअभोगः ॥ एहि शरणको
नरभावो नरसना एक सहस्र रसना कौन दई विधा
ता ॥ गोविंद बलि तन मन धन वारनै सबनकीजी

ग.गा
८६

86

कहें गोविंद जमुनाकी जापर कृपा सोई वल्लभ कु
ल शरण आयो ॥ रागिनी रामकली ताल ३ ॥
जमुनाके पद ॥ चरण पंकज रेणु जमुना देनी
इतिश्रष्याई ॥ कलिजुग जीव उद्धारन कारण
काटन पाप अब धार पेनी ॥ इतंतरा । अथ आभो
गः ॥ प्राण पति प्राण यह आय भक्तन नेह सकल

प्रभु देखि इनकी ओर मानो नव दुलहनी आई गा
वने ।। रागिनी रामकली ताल जमुनाके पद
जमुन जस जगतमै जोई गायो ।। इति स्थाई ।।
ताकी आसलकै रहतहै प्राण पति नैनमै बैनमे
रसजो छायो ।। इत्यंतरा । अथआभोगः ।। वेद
पुराणकी बात यह अगमहे प्रेमकोऊन पायो॰

८९
१-१.

मन मोहन प्रियके संग भक्तन कीं कीज भीरे ॥ छी
त स्वामी गिरिधरन श्रीविठ्ठल ता विनानै कनहीं
धरत धीरे ॥ रागिनी रामकली ताल जमु
नाकेपद ॥ जोई गावे जमुना यह नाम आवे ॥ ३
नित्यप्रत्याई ॥ ताऊपर कृपा करत श्रीवल्लभ प्रभु
सोई जमुना जीकौ भेद पावे ॥ ३ मेनरा ॥ श्रयश्रा

यह सबकी होउ सेनी ॥ गोविंद प्रेम विना रहन न

हि एक छिन अनिहि आतर चंचल जो नेनी ॥ रागि

नो रामकली नाल ॥ जमुनाके पद ॥ धाइकें जा

इजे जमुना तीरे ॥ इतिअस्याई ॥ तिनह्हीकी महि

मा कहांलौं वर नीये जाई पर मन प्रेम प्रेरा तीरे ॥

१ सेनरा । अथआभोगः ॥ निस दिन केलि करत